रवीन्द्रनाथ ठाकुर

स्त्री का पत्र

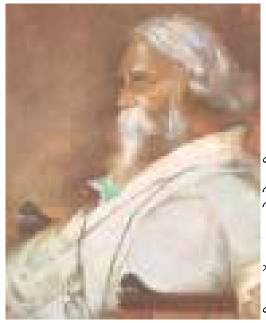

नीरज पॉल द्वारा फोटोग्राफी

डीपी राय चौधरी (1899-1975) द्वारा बनाया गया रवीन्द्रनाथ ठाकुर का यह चित्र राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नई दिल्ली से प्राप्त किया गया है

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

रवीन्द्रनाथ ठाकुर भारत के महान कथाकारों में से एक हैं। कविता, चित्रकला और संगीत की दुनिया में भी उनका अपना विशेष स्थान है। लिखने का अति सरल ढंग अपनाते हुए उन्होंने समाज के विभिन्न वर्गों, जैसे किसानों और ज़मींदारों के विषय में लिखा। जातिवाद, भ्रष्टाचार और निर्धनता जैसी सामाजिक बुराइयाँ उनकी रचनाओं की अभिन्न अंग बनी रहीं।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर का जन्म सन् 1861 में पश्चिम बंगाल के एक धनी ज़मींदार परिवार में हुआ था। सन् 1941 में उनकी मृत्यु हुई। अपने लंबे लेखन-काल में उन्होंने 10 से अधिक लघु कथाओं की रचना की। *स्त्री का पत्र* उन्हीं कथाओं में से एक है।

KATHA

पहला संस्करण 1991, दूसरा संस्करण 2004, तीसरा संस्करण 2009
चौथा संस्करण 2010, पाँचवाँ संस्करण 2010
कृति स्वामित्व © कथा, 1991
सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।
नई दिल्ली द्वारा मुद्रित
ISBN 978-81-85586-02-1

कथा एक पंजीकृत अलाभकारी संस्था है। कथा का मुख्य उद्देश्य है, बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना।
ए-3 सर्वोदया एनक्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नई दिल्ली–110017
दूरभाषः 2652 4350, 2652 4511
फैक्सः 2651 4373
ई मेलः kathakaar@katha.org
इंटरनेटः http://www.katha.org

कथा नियमित रूप से पेड़ लगाती है उस लकड़ी के बदले, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज़ बनता है।
इस किताब की बिक्री से मिली राशि का 10% अल्पाधिकारी बच्चों के एक स्कूल, कथाशाला को दिया जाएगा।

स्त्री का पत्र

लेखक

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

चित्राँकन

अतनु राय

अनूदित और पुनर्कथित

दीपान्विता, रुचिरा लाहिड़ी

कथा, नई दिल्ली

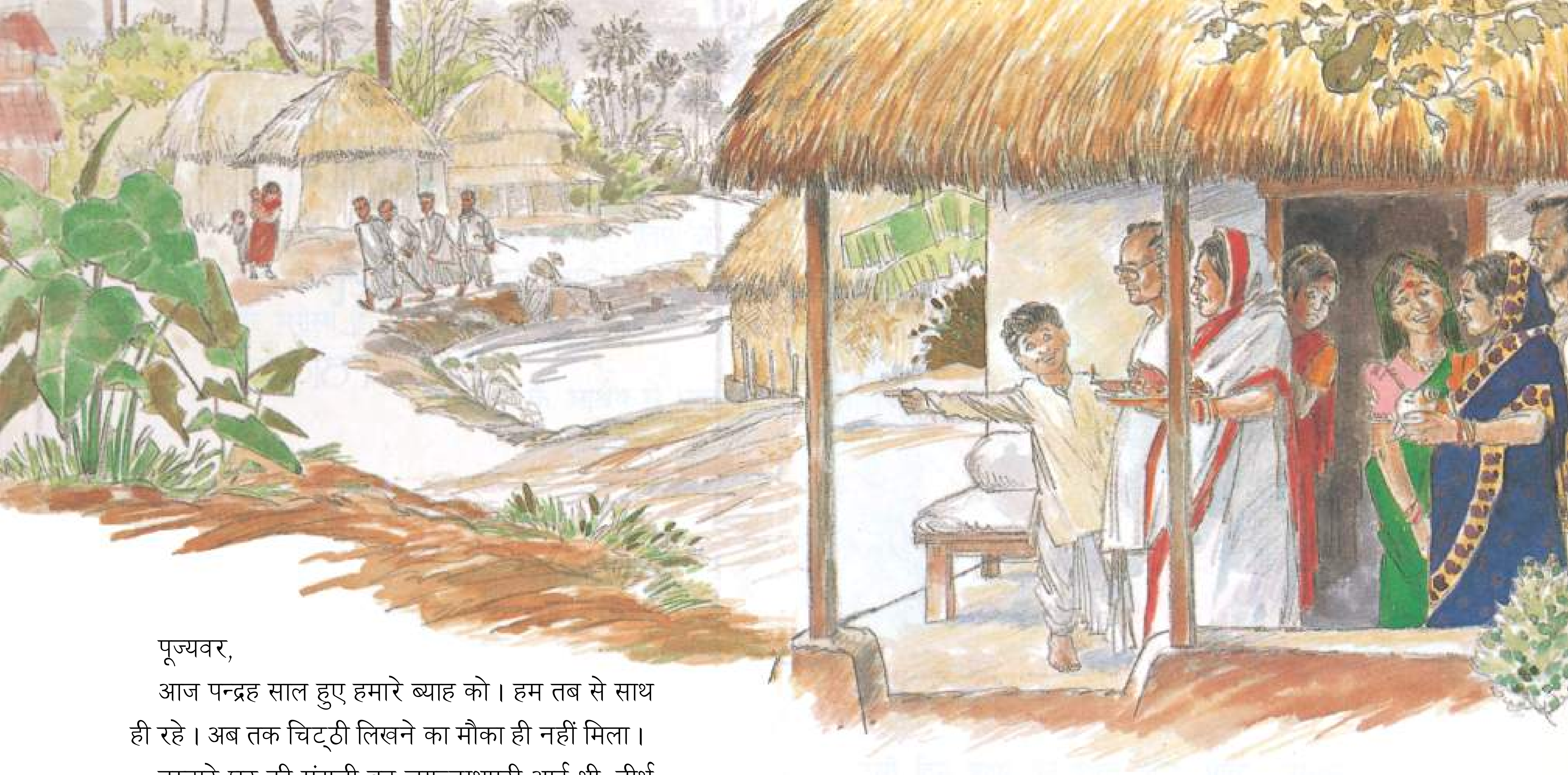

पूज्यवर,

आज पन्द्रह साल हुए हमारे ब्याह को। हम तब से साथ ही रहे। अब तक चिट्ठी लिखने का मौका ही नहीं मिला।

तुम्हारे घर की मंझली बहू जगन्नाथपुरी आई थी, तीर्थ करने। आई तो जाना कि दुनिया और भगवान के साथ मेरा एक नाता और भी है। इसलिए आज चिट्ठी लिखने का साहस कर रही हूँ। इसे मंझली बहू की चिट्ठी न समझना।

वह दिन याद आता है, जब तुम लोग मुझे देखने आए थे। मेरा बारहवाँ साल लगा था। सुदूर गाँव में हमारा घर था। पहुँचने में कितनी मुश्किल हुई तुम सबको। और मेरे घर के लोग आवभगत करते-करते परेशान हो गए।

विदाई की करुण धुन गूँज उठी। मैं मझली बहू बनकर तुम्हारे घर आई। सभी औरतों ने नई दुल्हन को जाँच-परखकर देखा। सबको मानना पड़ा – बहू सुन्दर है।

मैं सुन्दर हूँ, यह तो तुम लोग जल्दी भूल गए। पर मुझमें बुद्धि है, यह बात तुम लोग चाहकर भी न भूल सके। माँ कहती थी, औरत के लिए तेज़ दिमाग भी एक बला है।

लेकिन मैं क्या करती। तुम लोगों ने उठते-बैठते कहा, “यह बहू तेज़ है।”

लोग बुरा भला कहते हैं सो कहते रहें। मैंने सब माफ कर दिया।

मैं छिप-छिप कर कविता लिखती थी। कविताएँ थीं तो मामूली, लेकिन उनमें मेरी अपनी आवाज़ थी। वे कविताएँ तुम्हारे रीति-रिवाजों के बंधनों से आज़ाद थीं।

मेरी नन्हीं बेटी को छीनने के लिए मौत मेरे बहुत पास आई। उसे ले गई, पर मुझे छोड़ गई। माँ बनने का दर्द मैंने उठाया, पर माँ कहलाने का सुख न पा सकी।

इस हादसे को भी पार किया। फिर से जुट गई रोज़मर्रा के काम-काज में। गाय-भैंस, सानी-पानी में लग गई। तुम्हारे घर का माहौल रूखा और घुटन भरा था। ये गाय-भैंस ही मुझे अपने से लगते थे। इसी तरह शायद जीवन बीत जाता।

आज का यह पत्र शायद लिखा ही नहीं जाता। लेकिन अचानक मेरी गृहस्थी में ज़िन्दगी का एक बीज आ गिरा। यह बीज जड़ पकड़ने लगा और गृहस्थी की पकड़ ढीली होने लगी। जेठानीजी की बहन, बिन्दू अपनी माँ के गुज़रने पर हमारे घर आ गई।

मैंने देखा तुम सभी परेशान थे। जेठानीजी के पीहर की लड़की, न रूपवती, न धनवती। दीदी इस समस्या को लेकर उलझ गई। एक तरफ बहन का प्यार तो एक तरफ ससुराल की नाराज़गी।

अनाथ लड़की के साथ ऐसा रूखा बर्ताव होते देख मुझसे रहा न गया। मैंने बिन्दू को अपने पास जगह दी। जेठानी दीदी ने चैन की साँस ली। गलती का बोझ मुझ पर आ पड़ा।

पहले-पहले मेरा स्नेह पाकर बिन्दु सकुचाती थी। पर धीरे-धीरे वह मुझे बहुत प्यार करने लगी। बिन्दू ने प्रेम का विशाल सागर मुझ पर उड़ेल दिया। मुझे कोई इतना प्यार और सम्मान दे सकेगा, यह मैंने सोचा भी न था।

बिन्दू को जो प्यार दुलार मुझसे मिला, वह तुम लोगों को फूटी आँखों न सुहाया। याद आता है वह दिन, जब बाजूबन्ध गायब हुआ। बिन्दू पर चोरी का इल्ज़ाम लगाने में तुम लोगों को पल भर की झिझक न हुई।

बिन्दू के बदन पर ज़रा सी लाल घमोरी क्या निकली, तुम लोग झट बोले - चेचक। किसी इल्ज़ाम का सबूत न था। सबूत के लिए उसका "बिन्दू" होना ही काफी था।

बिन्दू बड़ी होने लगी। साथ-साथ तुम लोगों की नाराज़गी भी बढ़ने लगी। जब लड़की को घर से निकालने की हर कोशिश नाकाम हुई तब तुमने उसका ब्याह तय कर दिया।

लड़के वाले लड़की देखने तक न आए। तुम लोगों ने कहा, ब्याह लड़के के घर से होगा। यही उनके घर का रिवाज़ है।

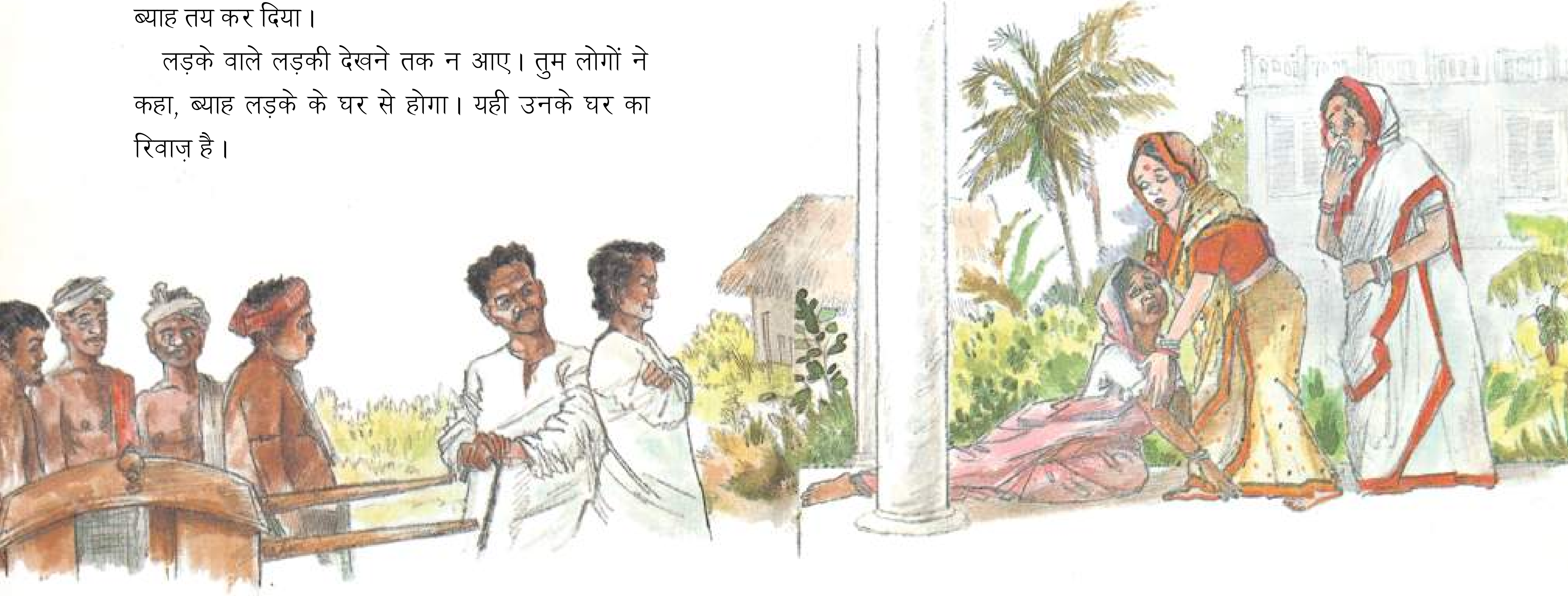

सुनकर मेरा दिल काँप उठा। ब्याह के दिन बिन्दू अपनी दीदी के पाँव पकड़कर बोली, "दीदी, मुझे इस तरह मत निकालो। मैं तुम्हारी गौशाला में पड़ी रहूँगी। जो कहोगे सो करूँगी ...।"

बेसहारा लड़की सिसकती हुई मुझसे बोली, "दीदी, क्या मैं सचमुच अकेली हो गई हूँ?"

मैंने कहा, "ना बिन्दू ना। तुम्हारी जो भी दशा हो, मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।" जेठानी दीदी की आँखों में आँसू थे। उन्हें रोककर वह बोलीं, "बिन्दिया, याद रख, पति ही पत्नी का परमेश्वर है।"

तीन दिन हुए बिन्दू के ब्याह को। सुबह गाय-भैंस को देखने गौशाला में गई तो देखा एक कोने में पड़ी थी वह। मुझे देख फफककर रोने लगी।

बिन्दू ने कहा कि उसका पति पागल है। बेरहम सास और पागल पति से बचकर वह बड़ी मुश्किल से भागी।

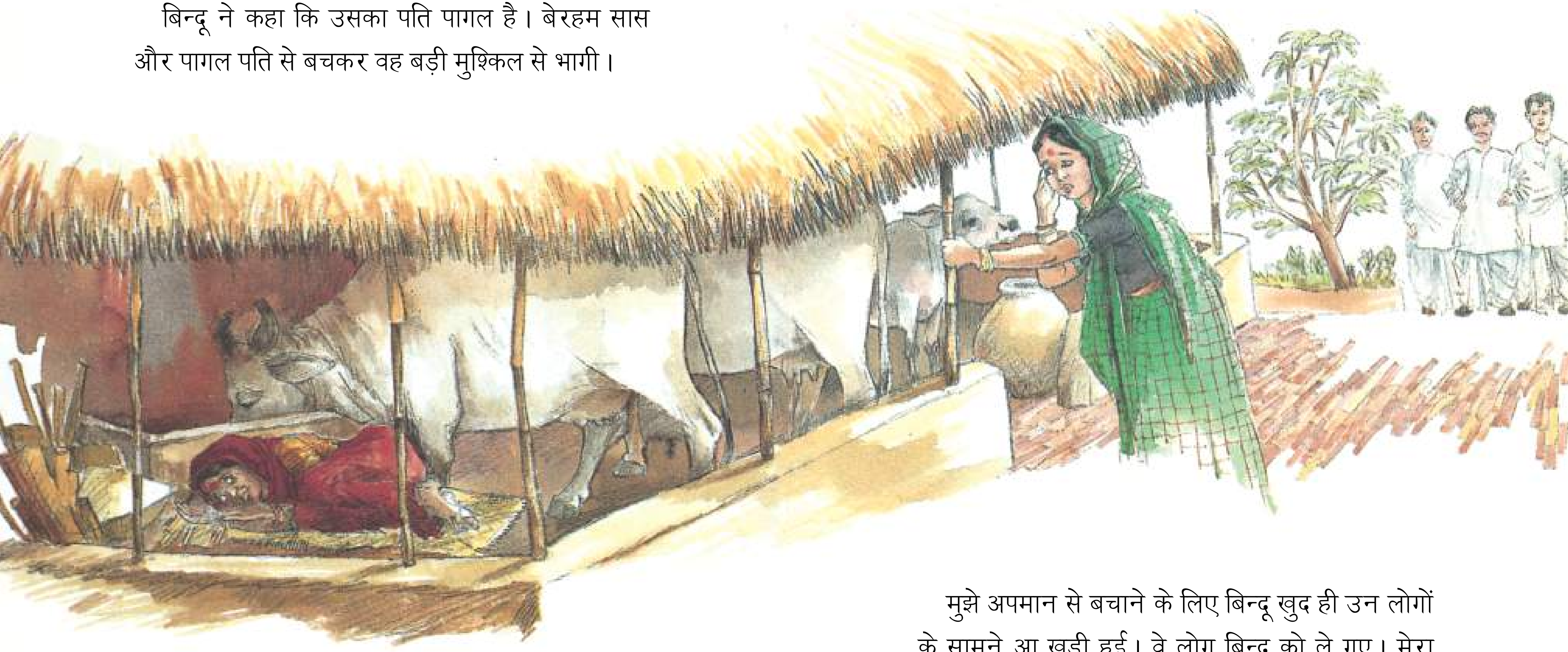

गुस्से और घृणा से मेरे तन-बदन में आग लग गई। मैं बोल उठी, "इस तरह का धोखा भी भला कोई ब्याह है? तू मेरे पास ही रहेगी। देखूँ तुझे कौन ले जाता है।"

तुम सबको मुझ पर बहुत गुस्सा आया। सब कहने लगे, "बिन्दू झूठ बोल रही है।" कुछ ही देर में बिन्दू के ससुराल वाले उसे लेने आ पहुँचे।

मुझे अपमान से बचाने के लिए बिन्दू खुद ही उन लोगों के सामने आ खड़ी हुई। वे लोग बिन्दू को ले गए। मेरा दिल दर्द से चीख उठा।

मैं बिन्दू को रोक न सकी। मैं समझ गई कि चाहे बिन्दू मर भी जाए, वह अब कभी हमारी शरण में नहीं आएगी।

तभी मैंने सुना कि बड़ी बुआजी जगन्नाथपुरी तीर्थ करने जाएँगी। मैंने कहा, "मैं भी साथ जाऊँगी।" तुम सब यह सुनकर खुश हुए।

मैंने अपने भाई शरत को बुला भेजा। उससे बोली, "भाई, अगले बुधवार मैं पुरी जाऊँगी। जैसे भी हो बिन्दू को भी उसी गाड़ी में बिठाना होगा।"

उसी दिन शाम को शरत लौट आया। उसका पीला चेहरा देखकर मेरा कलेजा धक से रह गया। मैंने सवाल किया, "उसे राज़ी नहीं कर पाए?"

"उसकी ज़रूरत नहीं। बिन्दू ने कल अपने आपको आग लगाकर आत्महत्या कर ली," शरत ने उत्तर दिया। मैं स्तब्ध रह गई।

मैं तीर्थ करने जगन्नाथपुरी आई हूँ। बिन्दू को यहाँ तक आने की ज़रूरत नहीं पड़ी। लेकिन मेरे लिए यह ज़रूरी था।

जिसे लोग दुख-कष्ट कहते हैं, वह मेरे जीवन में नहीं था। तुम्हारे घर में खाने-पीने की कमी कभी नहीं हुई। तुम्हारे बड़े भैया का चरित्र जैसा भी हो, तुम्हारे चरित्र में कोई खोट न था। मुझे कोई शिकायत नहीं है।

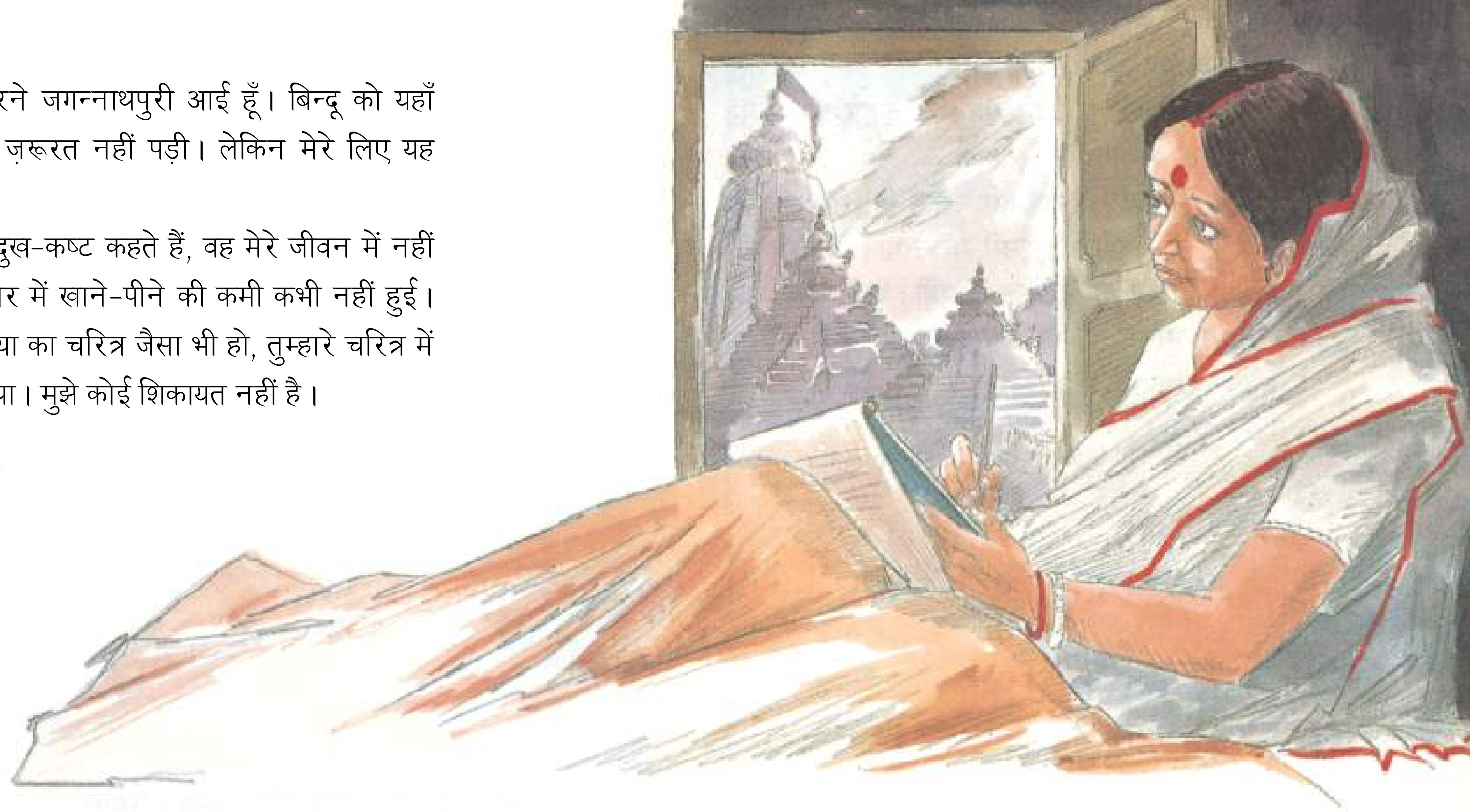

लेकिन अब मैं लौटकर तुम्हारे घर नहीं जाऊँगी। मैंने बिन्दू को देखा। घर गृहस्थी में लिपटी औरत का परिचय मैं पा चुकी। अब मुझे उसकी ज़रूरत नहीं। मैं तुम्हारी चौखट लाँघ चुकी। इस वक्त मैं अनन्त नीले समुद्र के सामने खड़ी हूँ।

तुम लोगों ने अपने रीति-रिवाजों के परदे में मुझे बंद कर दिया था। न जाने कहाँ से बिन्दू ने इस परदे के पीछे झाँककर मुझे देख लिया। और उसी बिन्दू की मौत ने हर परदा गिराकर मुझे आज़ाद किया। मंझली बहू खत्म हुई।

क्या तुम सोच रहे हो कि मैं अब बिन्दू की तरह मरने चली हूँ? डरो मत। मैं तुम्हारे साथ ऐसा पुराना मज़ाक नहीं करूँगी।

मीराबाई भी मेरी तरह औरत थी। उसके बंधन भी कम नहीं थे। उनसे मुक्ति पाने के लिए उसे आत्महत्या तो नहीं करनी पड़ी। मुझे अपने आप पर भरोसा है। मैं जी सकती हूँ। मैं जीऊँगी।

तुम लोगों के आश्रय से मुक्त,

मृणाल

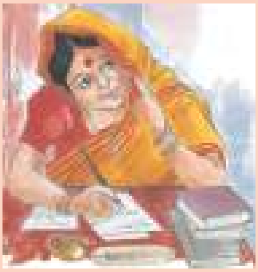

रीति-रिवाज के बन्धनों से अपने आपको आज़ाद करती हुई मंझली बहू के धैर्य और साहस की कहानी।

सर्वश्रेष्ठ कथामाला भारत के महान लेखकों की एक शानदार कहानी श्रृंखला है। आइऐ अपने देश के साहित्य का खजाना खोजें, इन कहानियों और इनसे जुड़े खेलों और अभ्यासों के ज़रिए!

इस पुस्तक की कहानी सुप्रसिद्ध लेखक **रवीन्द्रनाथ ठाकुर** ने लिखी है।